चित्रःगूगल से साभार

पिताजी

घर की हैं मुस्कान पिताजी।
मेरे हैं भगवान पिताजी।।

माँ है मेरी धरती जैसी,
हैं आकाश समान पिताजी।

माता घर की नींव सरीखी,
सिर को ढके मकान पिताजी।

माँ है गीता रामायण- सी,
बातों से विज्ञान पिताजी।

रात - दिना वे महनत करते,
हैं मजदूर किसान पिताजी।

आफत आयी तूफानों- सी,
बने रहे चट्टान पिताजी।

अनुशासन में रखते सबको,
घर के हैं कप्तान पिताजी।

मीठी बातें मिश्री जैसी,
सचमुच हैं रसखान पिताजी।

सत्य, अहिंसा, समता वादी,
जन प्रेमी रहमान पिताजी।

बच्चों के हित अपनी इच्छा,
करते हैं कुर्बान पिताजी।

बिना इजाजत कौन गया घर,
वृद्ध बने दरबान पिताजी।

शिव कुमार दीपक
बहरदोई सादाबाद, हाथरस (उ. प्र.)